Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 10 | October 2023



भारतीय राजनीति को साम्प्रदायिक बनाने में सर एंटनी मैकडानल की भूमिका (1858-1900) संयुक्त प्रान्त (यूपी) के विशेष संदर्भ में।

डॉ. बीना जोशी

(असि. प्रो.) राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध इस मान्यता पर आधारित है कि सर एंटनी मैकडानल के प्रशासनिक सुधारों के साथ नौकरशाही का शासन आरंभ होता है। केम्पसन ने हिन्दी को प्रोत्साहित किया परिणामस्वरूप हिन्दी–उर्दू विवाद से साम्प्रदायिकता के आधार पर अलगाववाद की राजनीति प्रारंभ हो गई जिसका अंत भारत विभाजन के रूप में हुआ। सर सैयद अहमद खाँ के प्रयासों से अंग्रेज नौकरशाही को मनोवृत्ति और सोच में आश्चर्यजनक बदलाव आया। ए0एम0यू0 कालेज अलीगढ़ की स्थापना, अलीगढ़ आन्दोलन के रूप में उसकी अभिव्यक्ति, मुसलमानों में शैक्षिक क्रांति, उनमें राजनीतिक चेतना का उदय यह सब कुछ हुआ। यदि निष्पक्ष दृष्टि से अवलोकन करे तो स्पष्ट होगा कि मुसलमानों को राजनीतिक बनाने में न चाहते हुए भी अंग्रेज नौकरशाही का ही हाथ था। बात अलगाववाद की हो या सांप्रदायिकता की यह सत्य है कि इन प्रवृत्तियों के अंकुर ब्रिटिश नौकरशाही की मानसिकता में ही आते थे, ब्रिटिश नौकरशाही द्वारा चलाई गई राजनीति का परिणाम है कि भारत में सदा के लिए सांप्रदायिकता का दैव्य खड़ा कर देता है और भारत विभाजन के उपरांत भी यह दैत्य मर नहीं जाता। ब्रिटिश हितों का संरक्षण, भारतीय हितों की उपेक्षा, सांप्रदायिक वैमनस्य में बृद्धि, पृथकतावाद को बढ़ाना इन अधिकारियों की विशेषता रही है। इन अधिकारियों में बेक, मैकडानल, लायल, ऑकलैन्ड, लालची फ्रोस्व्यवेट, बटलर, मेस्टन, केम्पसन, हेली क्रेडक आदि प्रमुख रहे हैं। जिन्होंने ब्रिटेन स्थिति सरकार की नीतियों को प्रभावित किया।

उद्देश्य व दृष्टिकोण

इतिहासकारों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में ब्रिटिश सेवी वर्ग की भूमिका को पर्याप्त स्थान नहीं दिया है इस अन्याय का प्रतिकार करना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का अब तक विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया जा चुका है। जिसमें राष्ट्रवादी, साप्रदायिक व पश्चिमी दृष्टिकोण प्रमुख है। परन्तु भा0रा0 अभिलेखागार (एन0ए0आई) नई दिल्ली में इंडिया आफिस लन्दन (आई0ओ0एल) ने जिन नवीन अभिलेखों की जारी किया है। जिनमें पदाधिकारियों के व्यक्तिगत डायरियों, पत्रों, अर्धशासकीय पत्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय राजनीति को निर्धारित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

परिकल्पना

1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भारतीयों की मनः स्थिति को पंगु बनाने का प्रयास किया गया था।1

कुमाँऊ में अंग्रेज अधिकारी और उनकी पत्नियां निर्धन लोगों के कंधों पर चढ़कर लम्बी–लम्बी यात्राएं करती थी वह भी बिना पैंसे के।2

रानीखेत का अंग्रेज एस0डी0एम0 नेवलेट अदालत में बैठकर भारतीयों के मुंह पर फाइलें मारता था जिसके परिणाम स्वरूप उसको अपनी नाक से हाथ धोना पड़ा।3

भारतीय राजनीति में सांप्रदायिक खाई कुछ तो स्वाभाविक थी कुछ इसको ब्रिटिश नौकरशाही ने चौड़ा करने का काम किया। मैकाले की शिक्षा नीति के बारे में मुसलमानों की अनभिज्ञता के परिणाम स्वरूप सबसे पहले यही ब्रिटिश अधिकारियों की राजनीति का शिकार बने यही से नौकरशाही का शासन आरंभ हो रहा था4 इसी समय सर एंटनी मैकडानल संयुक्त प्रांत का गवर्नर बना वह बंगाल के पूर्वाग्रहों व कुन्ठाओं को अपने साथ लाया।5

मुसलमान सुरक्षा के लिए एक खतरा थे।6 परिणाम स्वरूप सरकारी सेवाओं में साम्प्रदायिक आरक्षण की नीति को अपनाया गया व मुसलमानों के लिए पाँच हिन्दुओं के अनुपात में तीन स्थान सुरक्षित रखे। नागरी प्रस्ताव रखा जिसे नागरी आती हो उसे ही लाभ मिलेगा। जो मुसलमानों पर प्रहार की एक चाल थी। लापल के शब्दों "सरकारी पदों में शैक्षिक योग्यताओं को अनिवार्य बनाने का लक्ष्य संप्रदायों को आपस में लड़ाना था"7 मैकडानल ने वे सभी उपाय कर डाले जो मुसलमानों को भर्ती से प्रभावित कर सकते थे। 1887 से 1913 तके सरकारी नौकरी में उनकी स्थिति अत्यंत सोचनीय हो गई थी।8 हिन्दू व मुसलमानों के लिए भाषा धीरे–धीरे प्रतिष्ठा का विषय बनने लगी। हिन्दी मुसलमानों को गन्दी लगती थी उसको सीखने में अपना अपमान समझते थे। केम्पसन9 ने भी शिवप्रसाद के दृष्टिकोण का समर्थन किया था।10 उसने लिखा उर्दू व उसका साहित्य निःसन्देह मुसलमानों की उत्पत्ति है।11

अंग्रेज नौकरशाही को अब विश्वास होने लगा था कि 1857 में जिस रूप में हिन्दू–मुसलमान अंग्रेजों के विरूद्ध मिलकर लड़े थे उनकी एकता में एक चौड़ी दरार हो चुकी थी इस दरार को डालने वाला मैकडानल था। आगरा के आयुक्त ने इस स्थिति से प्रसन्न होकर लिखा– "हिन्दू अपने आपको शक्तिशाली बनाने में लगे हैं"।12

अलगाववाद की राजनीति – मैकडावलवादी नीति के कारण मुसलमानों का वह वर्ग जिसे राबिन्सन 'उर्दू स्पीकिम इलीट'13 कहता है स्वयं को नई सामाजिक, राजनीतिक संरचना में असुरक्षित महसूस करने लगा वास्तव में ब्रिटिश नौकरशाही के यह कभी सहन नहीं हुआ कि हिन्दुओं और मुसलमानों का कोई भी वर्ग किसी भी स्तर पर संगठित हो। अधिकारी हिन्दुओं के सामने मुस्लिम राज्य का हब्बा खड़ा करते थे।14 लार्ड मेयो ने रेम्जे म्यारे से 1870 में स्पष्ट शब्दों में कहा –"प्रत्येक सैनिक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह इस गुट पर नजर रखे यह गड़बड़ी का मुख्य स्रोत है।"15

फ्रांसिस राबिन्सन का स्पष्ट विचार है कि –"आम मुसलमानों की दृष्टि में रखकर सरकार ने अपनी नीति निर्धारित की इसके आधार पर भारत में राजनीतिक दलों व गुटों का विकास हुआ। राजनीति का आधार धर्म बना।"16

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के आधार पर 1858 से लेकर 1900 तक तथा उससे आगे की भारतीय राजनीति वास्तव में ब्रिटिश नौकरशाही की विशिष्ट मनोवृत्ति का नतीजा थी। मेयो से लेकर कर्जन तक भारत का इतिहास राजनीति के खेल का इतिहास है इस खेल का आरम्भ होता है 1857 के असफल विद्रोह के अंत के साथ। इस खेल के पहले शिकार वे मुसलमान होते हैं जिनके चरित्र में लार्डमेयो को भी बगावत की गन्ध आती थी परिणाम स्वरूप उसने संभ्रान्त वर्ग को पूरी तरह से कुचल दिया था परिणामस्वरूप वे 50 वर्ष तक राजनीति का नाम नहीं लेना चाहते। विलियम हन्टर की पुस्तक 'द इंडियन मुसलमान' मुसलमानों के प्रति नौकरशाही प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती है। भौतिक व मनोवैज्ञानिक दमन का यह चक्र संयुक्त प्रांत (वर्तमान यू0पी0) एन्टनी मैकडानल तक चला। प्रस्तुत शोध का यही निष्कर्ष है।

अप्रकाशित सरकारी, अर्धसरकारी अभिलेख

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार व प्रकाशित संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डब्ल्यु, डब्ल्यु हन्टर, इंडियन मुसलमान।
2. हीरा सिंह भाकुनी, पंडित बद्रीदत्त पांडे, पेज–44
3. आर. गोपाल, इंडियन मुसलमान ए पोलिटिकल हिस्ट्री, 1858–1947
4. F. Rovinson, Separation among Indian Muslims Page- 39
5. Ibid- page-12
6. मैकडानल का पत्र कर्जन को, 18 मई 1900, कर्जन पेपर्स 201 IOL/NAI
7. सर ए0सी0 लायल का पत्र हेनरी मेन को 19 दिसंबर 1886 लायल पेपर्स / 48 IOR/NAI
8. आगरा सिविल लिस्ट, 1 जनवरी 1875, पेज – 52–58 पी0सी0सी0 1886–87
9. एजूकेशन कमीशन ई0सी0 एन्ड डब्ल्यु पी0एस0ओ, के समक्ष शिवप्रसाद सिंह की गवाई; पृष्ठ 314
10. बरेली कालेज के प्राचार्य 1856, शिक्षा निदेशक संयुक्त प्रांत 1861–18–75
11. कम्पसन का संयुक्त प्रांत के सचिव को पत्र, जून 1890 IOL/NAI
12. ए0 केडेल आगरा आयुक्त का पत्र, संयुक्त प्रांत के मुख्य सचिव को, जून 1890 IOL/NAI
13. फ्रांसिस राबिन्सन, Separation among Indian muslims'
14. ww.huntr, The Indian muslims.

NAI- National Archives of India.
IOL- India Office London
UP- United Province
IOR- India Office Records.